श्रीमती मोइली

खलिहान के फर्श पर कुछ गिरा.
श्रीमती मोइली उसे देखने के लिए आगे आईं.
"क्यों," उन्होंने कहा, "यह तो वही पुस्तक है जिसे किसान का
छोटा लड़का कल पढ़ रहा था. वो उसे छोड़कर चला गया होगा."

श्रीमती मोइली किताब पढ़ नहीं सकीं, लेकिन उन्हें तस्वीरों को देखने में खूब मजा आया. एक टब में तीन आदमियों की तस्वीर! एक बूढ़ी औरत का चित्र जो एक जूते में रहती थी. और चाँद के ऊपर एक गाय के कूदने की तस्वीर! "कितना मजा है!" श्रीमती मोइली ने चिल्लाते हुए कहा. फिर उन्होंने अभ्यास के लिए तुरंत एक छोटी छलांग लगाई.

"अरे!" मुर्गी चिल्लाई. "तुमने मेरे अंडो को उछाल दिया! तुम भला क्या कर रही हो?"

"मैं अभ्यास कर रही हूँ," श्रीमती मोइली ने कहा. "मैं चाँद पर कूदने जा रही हूँ."
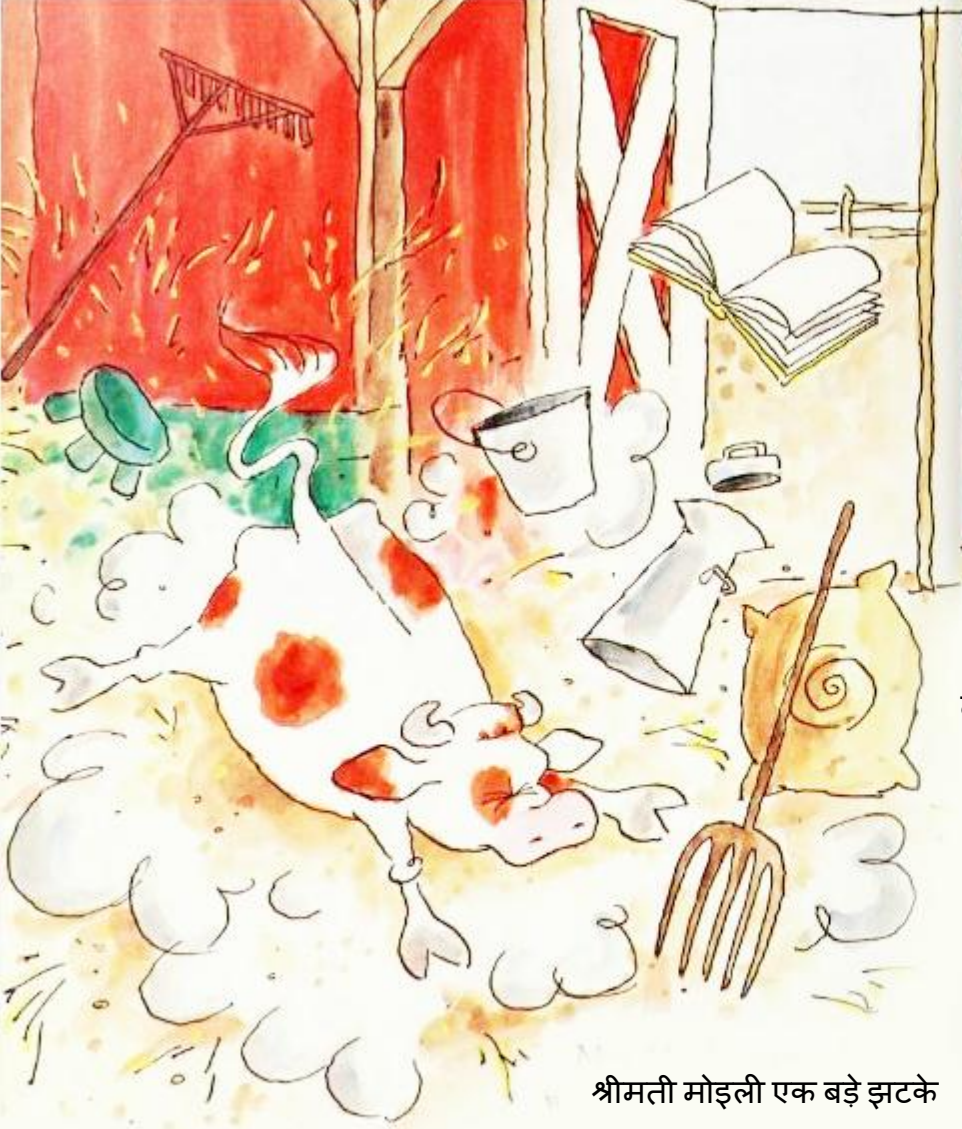
श्रीमती मोइली एक बड़े झटके के साथ नीचे गिरीं जिसने पूरे खलिहान को हिला दिया.

"चाँद पर छलांग!?" मुर्गी ने दोहराया. "कुट-कुट-कटम!“
वह हँसी से तड़प उठी. वह इतनी ज़ोर से हँसी, कि उसके
दो अंडों में से चूज़े निकल आये.

मचान पर बैठा कबूतर श्रीमती मोइली पर हँसा.
भूसे में बैठा चूहा भी श्रीमती मोइली पर हँसा.
"क्या हुआ?” बत्तख ने जानना चाहा.
वे बस हँसते और हँसते रहे.
फिर उन्होंने दूसरों को यह खबर सुनाई.
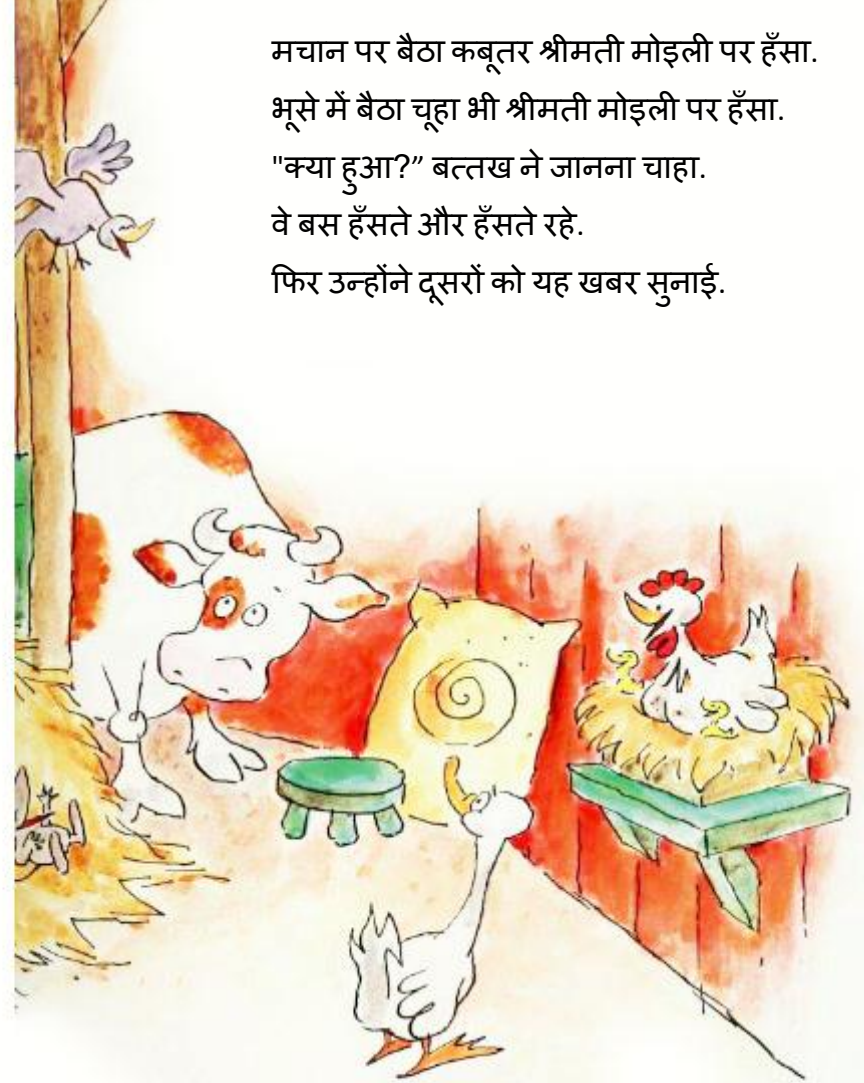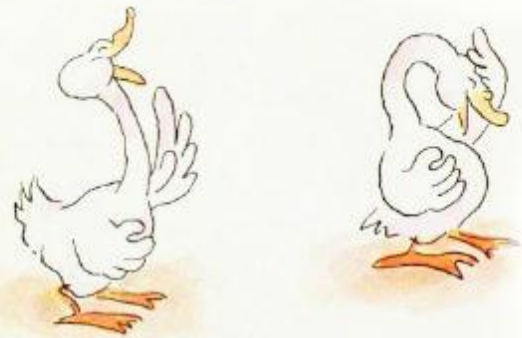
"हा! हा!" हंस इतनी ज़ोर से हँसा, कि उसकी पूंछ के तीन पंख खो गये.

हंस ने यह खबर बत्तख को बताई.

"क्वाक!" बतख हँसी, और उसने घोड़े को बताया. घोड़ा इतनी ज़ोर से हंसा, कि उसे हिचकी आ गई. "यह सब क्या चल रहा है?" सुअर ने पूछा.

"श्रीमती मोइली कहती हैं कि वो चंद्रमा पर कूदने जा रही हैं,"
घोड़े ने सुअर को बताया.
सुअर इतनी ज़ोर से हँसा, कि वो एक मिट्टी के गढ्ढे में गिर पड़ा
- वहां लोटने की वो पहले से ही योजना बना रहा था.

जब वो साँस लेने ऊपर आया तो उसने बकरी को
श्रीमती मोइली के बारे में बताया.
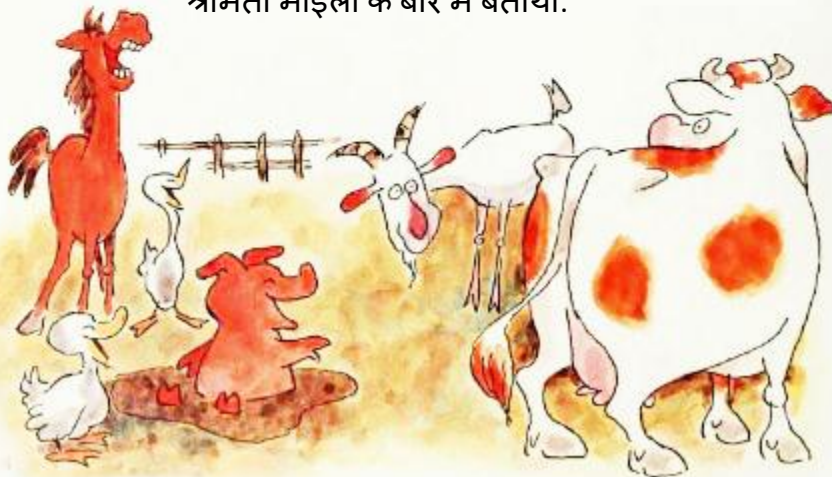
बकरी हंस पड़ी. सुअर हँसा. घोड़ा हँसा. बतख हँस पड़ी.
हंस, हँस पड़ा. चूहा और कबूतर भी हंसे.
मुर्गी और उसके चूज़े भी हंसे.
वे सभी सोते समय तक
श्रीमती मोइली पर हँसते रहे.

सभी जानवर सो गए - श्रीमती मोइली को छोड़कर.

वो खलिहान के बाहर ऊपर-नीचे कूदने का अभ्यास करती रहीं.

"यह सब करने के लिए दृढ़ संकल्प चाहिए," उन्होंने खुद से कहा,

"और थोड़ा अभ्यास भी!"

सारी रात श्रीमती मोइली ने छलांग लगाई और वो कूदती रहीं.

ऊपर चाँद चमकता रहा.

श्रीमती मोइली तब भी कूद रही थीं जब पूरब के आकाश

में एक फीकी रोशनी ने सुबह का आगाज़ किया.

पश्चिम में चंद्रमा डूबने लगा.

आकाश में उसकी लम्बी यात्रा अब समाप्त हो रही थी.
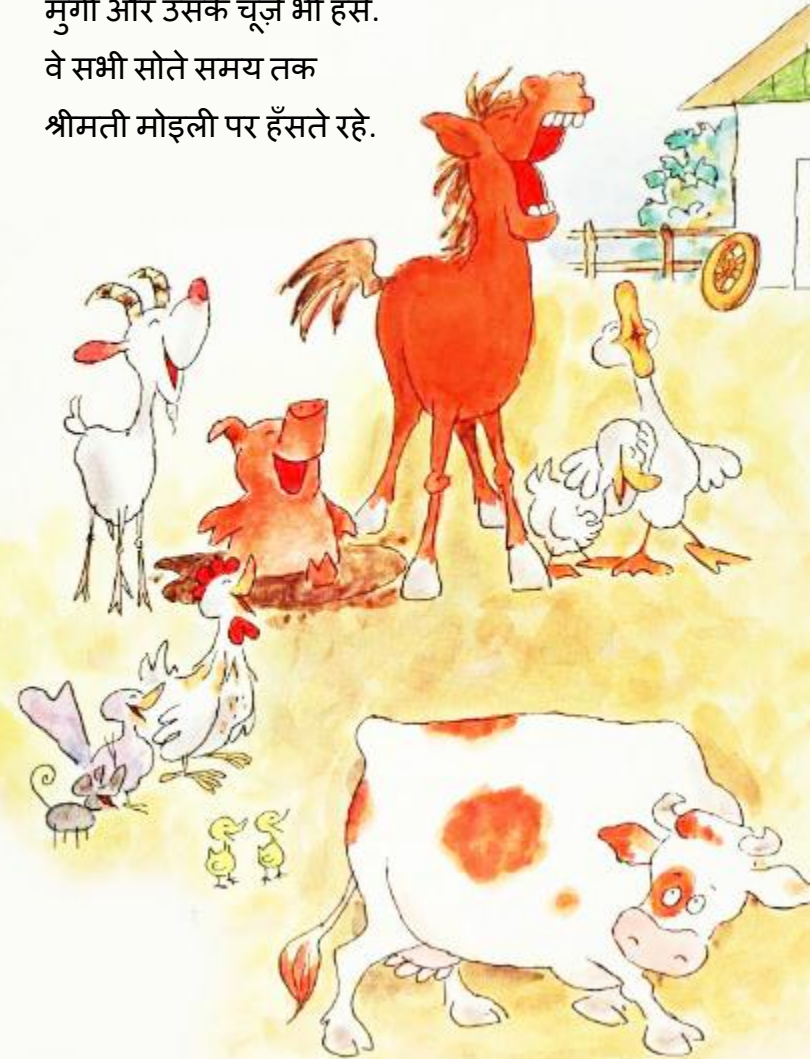
मुर्गे ने बांग दी, और फिर एक-एक करके सभी जानवर जाग गए.

अब आसमान में चाँद इतना नीचे था कि लगता था
कि जैसे वो ज़मीन पर बैठा हो.
कुछ ही मिनटों में वो लुप्त हो जाएगा.
श्रीमती मोइली के पास बस
एक आखिरी छलांग का समय ही बचा था.

यह अभी तक की उनकी सबसे ऊंची कूद थी.

जानवरों ने चांद को जमीन पर बैठे देखा.

उन्होंने श्रीमती मोइली को हवा में उछलते हुए देखा!

उन्होंने श्रीमती मोइली को चाँद पर कूदते हुए देखा!

हंस बहुत उत्साहित था,
और उसने अपनी पूंछ का एक और पंख खो दिया.
घोड़ा बहुत उत्साहित था, उसकी हिचकी वापस आ गई.
और सूअर फिर से कीचड़ में धंस गया.

"वो कर पाईं! वो सफल हुईं! वाह!" मुर्गी चिल्लाई.
वो बहुत उत्साहित थी, और उसने एक और अंडा सेया.
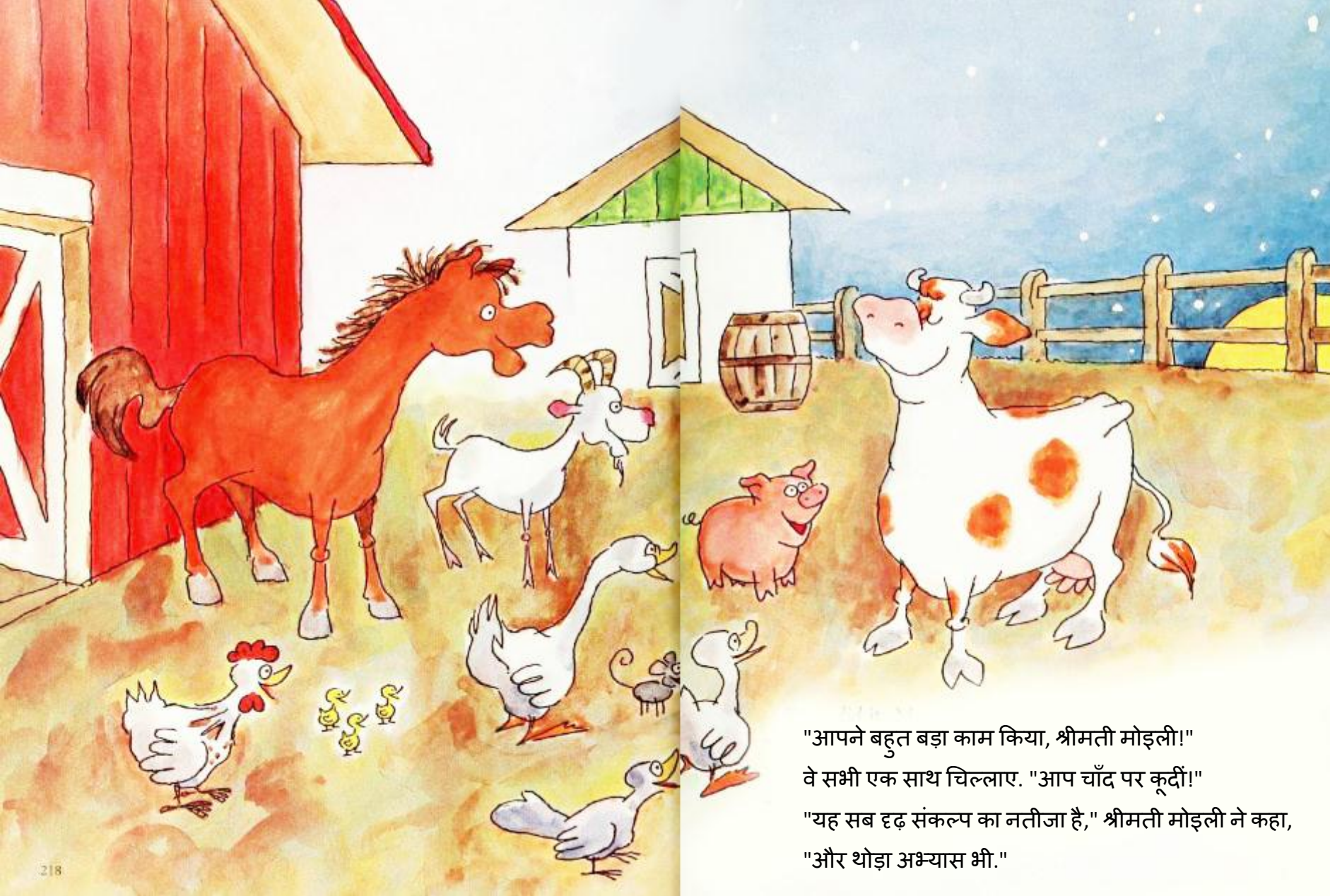
"आपने बहुत बड़ा काम किया, श्रीमती मोइली!"

वे सभी एक साथ चिल्लाए. "आप चाँद पर कूदीं!"

"यह सब दृढ़ संकल्प का नतीजा है," श्रीमती मोइली ने कहा,

"और थोड़ा अभ्यास भी."

"लगता है कि मैं अगली बार सूरज पर कूदूंगी," श्रीमती मोइली ने कहा. "इससे पहले किसी भी गाय ने कभी ऐसा नहीं किया है."

"सूरज पर छलांग!" कह कर सुअर वापस कीचड़ में गिर गया. असल में वो वही करना चाहता था.

पर इस बार श्रीमती मोइली पर कोई भी नहीं हंसा.

"सूरज पर छलांग के बाद, कौन जानता है?" श्रीमती मोइली ने कहा. "ऊपर छलांग लगाने के लिए तमाम तारे और ग्रह अभी भी बाकी हैं!"

"क्या आप सच में वो सब कर पाएंगी?" घोड़े ने पूछा.

"क्यों नहीं?" श्रीमती मोइली ने कहा. वो अब थक गईं थीं और घास में लेटी गयीं थीं. "यह सब दृढ़ संकल्प का नतीजा है," फिर श्रीमती मोइली की आंखें बंद हो गईं. वह जल्द ही सो गईं.

"और थोड़ा अभ्यास भी," मुर्गी ने आगे जोड़ा. उसे अधूरी बात पसंद नहीं थी.

समाप्त